Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Reviewed International Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-VII July 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

हिन्दी के जीवनीपरक उपन्यास

डॉ. लीला कर्वा
लातूर.

जीवनी अथवा जीवन चरित्र साहित्यिक की एक विद्या है जो हिन्दी में अंग्रेजी के बायोग्राफी के पर्याय के रुप में प्रचलीत है । जीवनी शब्द जीवन शब्द से निर्मित हुआ है जिसका अर्थ है किसी व्यक्ति के जीवन का आलेख । परन्तु उसमें केवल किसी व्यक्ति के जीवन का केवल इतिहास नहीं तो उसके साथ ही साहित्यिक सौन्दर्य के रुप में उसका प्रस्तुतिकरण भी है ।

प्रसिध्द समालोचक बाबु गुलाबराय के अनुसार *जीवनी घटनाओं का अंकन नहीं वरण चित्रण है* । वह साहित्य की विद्या है उसमें साहित्य और काव्य के सभी गुण हैं । वह मनुष्य के अंतर और बाह्य स्वरुप का कलात्मक निरुपण है ।

जीवनी परक अभ्यास हिन्दी साहित्य की वह विद्या है जो किसी व्यक्ति विशेष के वास्तविक जीवन चरित्र की संभाव्य कल्पना के परिप्रेक्ष्य में कलात्मक रुप से लिखा गया हो ।

हिन्दी साहित्य में जीवनी लेखन का प्रारम्भ भारतेन्दु युग से हुआ । इस युग में लगभग ५० जीवनियाँ प्रकाशित हुई । इन जीवनियों में कार्तिक प्रसाद खत्री कृत अहिल्याबाई होळकर और छत्रपति शिवाजी का जीवन चरित्र, मीराबाई श्री राधाकृष्ण कृत कविवर बिहारीलाल तथा सूरदास आदि जीवन चरित्र उल्लेखनिय है ।

भारतेन्दु युग की जीवनियों में नायक के चरित्र चित्रण पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता था, नायक के गुणों की प्रशंसा की जाती थी । परन्तु भारतेन्दु युग के जीवनी साहित्य में हिन्दी के भविष्यकालीन जीवनी साहित्य और जीवनीपरक उपन्यासों के अंकुर फुटते दिखाई देते हैं ।

द्विवेदी युग में लगभग ३०० से उपर जीवनियाँ लिखी गयी । इस काल के लेखकों ने तत्कालीन महापुरुषों के चरित्रों को जीवनी का विषय बनाया । महात्मा गांधी, स्वामी दयानन्द, लाला लाजपतराय, पं. मदनमोहन मालवीय, दादाभाई नौरोजी आदि महापुरुषों के जीवन पर आधारित साहित्य सृजन हुआ ।

द्विवेदी युग के बाद हिन्दी में चारसो से अधिक जीवनियाँ प्रकाश में आई हैं । इन जीवनियों में राजनीतिक क्षेत्र से संबंधित जीवनियाँ जिसमें डॉ. राजेन्द्रप्रसाद, पं. जवाहरलाल, नेहरु, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, लौह पुरुष सरदार पटेल शहीइ भगतसिंह, लालबहादुर शास्त्री आदि अनेक महापुरुषों का जीवनियों का प्रकाशन हुआ है ।

साहित्यिक क्षेत्र से संबंधित जीवनियों में संत कबिर तुलसी सूर मिरा के साथ साथ विश्वकवि रविन्द्रनाथ ठाकूर, शिवरानीदेवीकृत प्रेमचन्द्र घर में, अमृतराय कृत प्रेमचन्द्र कलम का सिपाही, डॉ. रामविलास शर्मा कृत निराला की साहित्य साधना, शांति जोशा कृत सुमित्रानंदन पंत - जीवन और साहित्य आदि अनेक जीवनियाँ उल्लेखनीय हैं ।

इसके साथ ही इस कालखंड में स्वामी दयानंद गुरु नानक, संत एकनाथ, स्वामी विवेकानंद, भगवान बुध्द आदि धार्मिक नेताओं के जीवन से सम्बन्धित और राणा प्रताप, पृथ्वीराज चौहान, छत्रपति शिवाजी, चन्द्रगुप्त मौर्य आदि ऐतिहासिक महापुरुषों की जीवनियाँ भी लिखी गई हैं ।

प्रेमचंद युग में हिन्दी उपन्यास के विकास में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ । इस कालखंड में भी अनेक चरित्र प्रधान उपन्यासों का प्रकाशन हुआ । इनमें कल्पना पर आधारित चरित्रप्रधान उपन्यासों की संख्या अधिक है । प्रेमचंद का रंगभूमि, बेचनप्रसाद शर्मा उग्र का शराबी, जयशंकर प्रसाद का कंकाल, जैनेंद्रकुमार का सुनीता भगवतीचरण वर्मा का चित्रलेखा, निराला का प्रभावती तथ निरुपमा आदि चरित्र प्रधान उपन्यास महत्वपूर्ण हैं । इस युग के उपन्यासों में चरित्र का विकास मनोवैज्ञानिक आधार पर किया गया है । इन उपन्यासों से प्रेरणा लेकर जीवनीपरक हिन्दी उपन्यासों में चरित्र चित्रन शैली का विकास किया ।

प्रेमचन्द्रोत्तर उपन्यासों का विकास कई आधारों पर हुआ है । कुछ उपन्यासों के नायक नितांत कल्पना पर आधारित, कुछ के प्रधान चरित्र इतिहास के आधार पर विकसित कुछ उपन्यासों के प्रमुख पात्र पौराणिक कथाओं पर आधारित हैं ।

कल्पना पर आधारित, सामाजिक, मनौवैज्ञानिक उपन्यासकारों में जैनेंन्द्र, निराला, भगवतीचरण वर्मा, अज्ञेय, यशपाल, अश्क अमृतलाल नागर, रामेय राघव, नागार्जुन आदि लेखकों का कार्य उल्लेखनिय है । जैनेंद्रकृत कल्याणी, त्यागपत्र, सियाराम, शरण की नारी, अज्ञेयकृत शेखर एक जीवन यशपाल कृत दिव्या, अश्कवृत गिरती दिवारे, अमृतलाल नागर कृत नाचौ बहुत गोपाल, नागार्जुन कृत बाबा बटेश्वर नाथ आदि महत्वपूर्ण उपन्यास है ।

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास में ऐतिहासिक उपन्यास धारा का अपना विशेष महत्व है । इस धारा के लेखकों में वृन्दावनलाल वर्मा, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. रांगेय राघव, अमृतलाल नागर जैसे प्रसिध्द उपन्यास शिल्पियों, उपन्यासों का सृजन किया है । डॉ. रांगेय राघव के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पर लिखा भारती का सपुत महाकवि तुलसीदास पर लिखीत रत्ना की बात, कबीर लिखीत लोई का ताना, यशोधरा जीत गई, वृंदावनलाल शर्माकृत *माधवजी सिंधिया, अहिल्याबाई होळकर, अमृतलाल नागर कृत मानस का हंस, खंजन मंजन, विष्णुचंद्र शर्मा कृत चाणक्य की जयकथा इत्यादि उल्लेखनिय हैं* ।

इसके साथ ही पौराणिक कथाओं से कुछ चरित्र चुने गए जिसमें डॉ. रांगेय राघव कृत देवकी का बेटा, श्री नरेन्द्र कोहली द्वारा राम के चरित्र पर लिखे गये जीवन चरित्र दीक्षा अवसर, संघर्ष की ओर और युध्द, चित्रा चतुर्वेदी कृत महाभारती आदि उपन्यास पौराणिक जीवनी परक उपन्यास कहा जा सकता है ।

निष्कर्षतः हिन्दी साहित्य में ऐतिहासिक पौराणिक काल्पनिक चरित्रों पर आधारित अनेक श्रेष्ठ जीवनीपरक हिन्दी उपन्यासों का सृजन हुआ है ।

संदर्भ ग्रंथसुची

- डॉ. शांति खन्ना- अधुनिक हिन्दी का जीवनीपरक साहित्य
- डॉ.सुरेखा एम. झाडे - अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यास